Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 5, Sept-Oct – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 04/09/2020 Accepted on : 22/09/2020 Publication Date: 30/09/2020

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के बालक तथा बालिकाओं में अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. विनय प्रताप सिंह
सहायक प्राध्यापक, श्याम शिक्षा महाविद्यालय सक्ती
जिला जांजगीर-चाम्पा (छ.ग.)
Email - vinat.endia@gmail.com

१ भूमिका:

स्वयं को शिक्षित कहने वाला समाज एवं शिक्षा राष्ट्र का बहुतायत प्रयोग करने वाले समाज में रहने वाले लोग शिक्षा का प्रयोग उसके वास्तविक अर्थ में बहुत कम कर पाते है। हम प्रायः यह समझ बैठते हैं, कि कुछ सूचनाओं को एकत्र करना ही शिक्षा है। कभी-कभी तो हम केवल उपाधि प्राप्त करने तक ही शिक्षा शब्द को सीमित कर देते है। सामान्यतः शिक्षा का अर्थ स्कूली शिक्षा से लिया जाता है। परंतु वास्तव में इसका अर्थ इससे कुछ भिन्न है और कुछ अधिक है। शिक्षा मनुष्य के विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विाकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि, आदतों में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वागीण एवं सर्वोत्तम विकास से है। शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययन बालक-बालिकाओं में अध्ययन संबंधी आदतें पायी जाती है। आदत उस व्यवहार को दिया जाने वाला नाम है जो इतनी अधिक बार दोहराया जाता है, कि वह व्यवहार यंत्रवत हो जाता है, जो कार्य हमें पहले कठिन जान पड़ता है वह दोहराने से आदत में आकर सरल लगता है।

२ समस्या कथन :

‘‘ शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के बालक - बालिकाओं में अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनान्मक अध्ययन‘‘ ।

३ अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित कियें गयें है-

- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बालक - बालिकाओं में अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

४ अध्ययन की परिकल्पनाएं :

प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्न परिकलपनाएं निर्मित की गयी है।
H1- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर नहीं होगा।
H2 - बालक - बालिकाओं में अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर नही होता।

५ अध्ययन की परिसीमन :

प्रस्तुत लघु शोध में परिसीमन निम्नानुसार किया गया-

- यह अध्ययन विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों के मापन तक सीमित हैं।
- यह अध्ययन सकती ब्लॉक के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों तक सीमित हैं।
- यह अध्ययन शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के बालक-बालिकाओं तक सीमित हैं।

६ शोध अभिकल्प:

शोध प्रारूप शोध की रूपरेखा तैयार करने की एक विधि है जिससे शोध उद्देश्यों, शोध विधियों तथा प्रदत्तों का संकलन, प्रदत्तों का विश्लेषण की सांख्यिकीय प्रविधियों तथा शोध प्रबंध का आवश्यक रूप से उल्लेख किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन अप्रयोगात्मक तथा 2-ळतवनच शोध अभिकल्प है।

७ अध्ययन का न्यादर्श:

न्यादर्श शब्द इकाइयों के एक समूह या संपूर्ण के एक अंश के लिए सुरक्षित होना चाहिए, जिसको इस विश्वास के साथ चुना गया कि वह संपूर्ण का प्रतिनिधित्व है।

सारणी क्रमांक- 1

न्यादर्श हेतु सक्ती ब्लॉक के शहरी क्षेत्र के बालक-बालिकाओ का विवरण

क्र.	शाला का नाम	विद्यार्थियों की संख्या	
		बालक	बालिका
1.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय ,सदर कन्या स्कुल सक्ती	10	10
2.	शा0 कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय , सक्ती	10	-
3.	शा0 आदर्श बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सक्ती	10	-
4.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय कसेरपारा, सक्ती	10	10
5.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय स्टेशनपारा, सक्ती	-	10
6.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय तुमान, सक्ती	-	10
	कुल विद्यार्थियों की संख्या	40	40

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में न्यादर्श के रूप में शहरी उ.मा. विद्यालयों में 40 बालकों तथा उ.मा. विद्यालयों में 40 बालिकाओं अर्थात 6 विद्यालयों से 80 विद्यार्थियों को लिया गया है।

सारणी क्रमांक- 2

न्यादर्श हेतु सक्ती ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र के बालक-बालिकाओ का विवरण

क्र.	शाला का नाम	विद्यार्थियों की संख्या	
		बालक	बालिका
1.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय बरपाली कला, सक्ती	-	10
2.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय गहरीनमुडा, सक्ती	10	-
3.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय बुढनपुर, सक्ती	10	-
4.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय पतेरापाली कला, सक्ती	-	10
5.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय अचानकपुर, सक्ती	10	10
6.	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय असौंदा, सक्ती	10	10
	कुल विद्यार्थियों की संख्या	40	40

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 में न्यादर्श के रूप में ग्रामीण उ.मा. विद्यालयों में 40 बालकों तथा उ.मा. विद्यालयों में 40 बालिकाओं अर्थात 6 विद्यालयों से 80 विद्यार्थियों को लिया गया है।

८ शोध विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण-

डा सी.पी. माथुर द्वारा निर्मित अध्ययन संबंधी एवं अभिवृत्ति का परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष -

H1 शहरी एवं गामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

लेखाचित्र क्र. 1

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों का ग्राफ

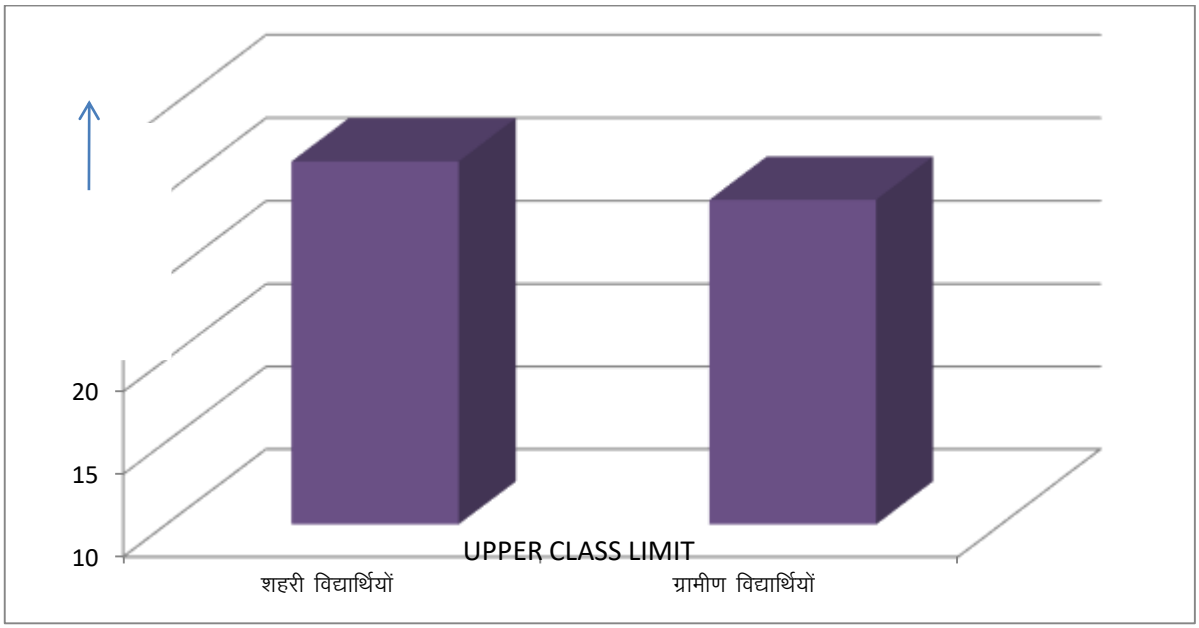

विवचेना-

शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर पाया गया। साथ ही अन्य कारक जैसे- घर का वातावरण, विद्यालय का वातावरण, अधिगम क्षमता आदि कारकों का प्रभाव उनके अध्ययन संबंधी आदतों पर पड़ सकता है। वर्तमान समय मे ग्रामीण विद्यार्थियों को नवीनतम विधियों एवं प्रविधियों आदि का प्रयोग कर पढ़ाया जा रहा है और शिक्षका कें प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की भर्ती हो रही है जिससे ग्रामीण विद्यार्थियों को भी उचित शिक्षा प्राप्त हो रही है जिससे उनकी अध्ययन संबंधी आदतो में उचित विकास हो रहा है।

परीणाम - H1 परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

निष्कर्ष - शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

H2 बालक-बालिकाओं में अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

लेखाचित्र क्र. - 2

बालक तथा बालिका क्षेत्र के अध्ययन संबंधी आदतों का ग्राफ

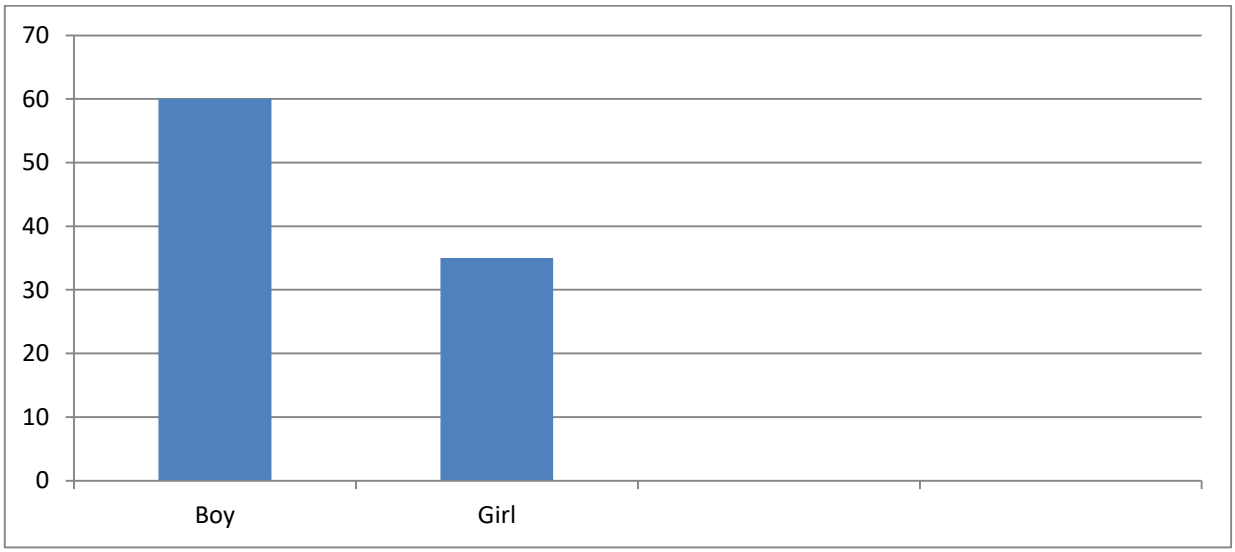

विवचेना-

बालक-बालिकाओं की अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर पाया गया। साथ ही अन्य कारक जैसे- घर का वातावरण, विद्यालय का वातावरण, अधिगम क्षमता आदि कारकों का प्रभाव उनके अध्ययन संबंधी आदतों पर पड़ सकता है। वर्तमान समय मे बालक-बालिकाओं को एक समान नवीनतम विधियों एवं प्रविधियों आदि का प्रयोग कर पढ़ाया जा रहा है और शिक्षकाकें प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की भर्ती हो रही है जिससे ग्रामीण विद्यार्थियों को भी उचित शिक्षा प्राप्त हो रही है जिससे उनकी अध्ययन संबंधी आदतो में उचित विकास हो रहा है।

परिणाम - H2 परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

निष्कर्ष - बालक तथा बालिकाओं के अध्यय संबंधी आदतों मंे सार्थक अंतर ं पाया गया।

९ शैक्षिक महत्व व सुझावः-

- शिक्षकों की बहुत बडी जिम्मेदारी है कि वे विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी आदतों का विकास करें।
- प्रस्तुत शोध द्वारा विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों का ज्ञान प्राप्त होता है। जो बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षको के लिए सहायक है।
- विद्यार्थियों को शिक्षक तथा अभिभावक द्वारा अभिप्रेरित करना चाहिए जिससे उनके अंदर अध्ययन संबंधी आदतों का कौशल विकसित हो।
- विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों का ज्ञान प्राप्त कर उसमें पाई जाने वाली कमियों का निदान किया जा सकता है।
- पुरानी परम्परागत विधियों का छोडकर नवीन विधियों के माध्यम से उनकी अध्ययन संबंधी आदतों का विकास करना।

संदर्भ ग्रंथ:

१ एरार, आर. आर. एवं ओक, ए. डब्लू (1985)- ‘‘इन्वेस्टीगंशन इन्टू दी स्टडी हैबिट आफ एडल्ट लरनर्स आफ ओपन सूनिवर्सिटी प्रोग्राम आफ SNDI वुमेन्स यूनिवर्सिटी और दा स्टडी आफ इम्पैक्ट गाइडेंस आन दीयर स्टडी हेबिट डेवल्पमेंट आफ रिसर्च SNDTU 1985, फोर्थ सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च ‘ वाल्युम II पृ. क्रं. 1527.

२ कुलश्रेष्ठ, प्रदीप कुमार (1992) - ‘‘हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन अध्ययन आदत एवं उपलब्धि पर शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन’’ पी. एच. डी. शिक्षा आगरा विश्वविद्यालय फिपथ (5जी) सर्वे आफ एजुकेशन रिसर्च वाल्युम प्प् एन.सी.ई.आर.टी. पृ.क्र. 1883.

कोउल, लोकेश (2003)- ‘‘शैक्षिक अनुसंधान की विधिया ‘ नई दिल्ली विकास पब्लिकेशन हाउस पी.बी.टी. लिमिटेड पृ.क्र. 111-120.

३ गैरेट हेनरी (2008)- ‘‘शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग ‘ नई दिल्ली, कल्याणी पब्लिशर्स ग्यारहवां संस्करण पु.क्र. 33-50

४ तिवारी, जी.एन. (1982) - ‘‘शालेय शिक्षा के तीन स्तरों में अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

५ पी.एच.डी. (साइकोलाजी)बी.एच.यू. (4जी) सर्वे आफ एजूकेशन रिसर्च , वाल्युम प्प्ए एन.सी.ई.आर.टी. पृ. क्रं. 862-1609.

६ तिवारी प्रीति एवं मेनन, राजश्री (2006) - ‘‘हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्र-छात्राओं की अध्ययन आदतों एवं अभिवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन ‘ व्याख्याता, शा.बहु.उच्च.माध्य. विद्यालय अक्टूबर-दिसम्बर2006 पृ. क्रं. 44-47.

७ देव, मधु एवं ग्रेवाल, हृदय पाल (1990) - ‘‘गृह विज्ञान विषय के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध ‘ इडियन एजूकेशन रिव्यू वाल्युम (5जी) सर्वे आॅफ एजूकेशन रिसर्च वाल्युम II एन.सी.ई.आर.टी. पृ. क्रं.1968-1868.

८ देवेन्द्र, डा. किरन (1992) - ‘‘एजूकेशन आफ ट्रिबल्स ‘ ‘ जनरल आफ इंडियन एजूकेशन, नवंबर 1992, वाल्युम-18 नं. 4, एन.सी.ई.आर.टी. पृ. क्रं.24-32.

९ नागेलियन,केरोलाइन (1988) - ‘‘कक्षा नवमीं के गणित विषय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन आदत एवं अभिवृत्ति ‘ एम. फिल. (शिक्षा) आर्य इस्टर्न हिल विश्वविद्यालय फिपथ (5जी) सर्वे आफ एजुकेशन रिसर्च वाल्युम एन.सी.ई.आर.टी. पृ.क्र. 1894